IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

रूचि छाबड़ा

शोधार्थी

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ0 (श्रीमती) रश्मि शर्मा

शोध निर्देशिका

प्राचार्य, संत योगी मानसिंह शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

सारांश :

आज के डिजीटल क्रान्ति के युग में नित नए उपकरण और नई तकनीकों की खोज से शिक्षा का क्षेत्र बहुत तेजी से विकसित हो रहा है। इन नवीन तकनीकों और इण्टरनेट का प्रयोग करके दी जाने वाली शिक्षा ई–लर्निंग कहलाती है। ई–लर्निंग का प्रयोग आज के समय की महती आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में कोविड महामारी के चलते ई–लर्निंग का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। लगभग सभी शैक्षिक संस्थाओं में ई–लर्निंग का प्रयोग शिक्षा देने के लिए किया जाने लगा है। विद्यालयों में शिक्षक ई–लर्निंग के प्रयोग द्वारा पढ़ाने लगे हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षकों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाया गया है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 महिला एवं पुरूष शिक्षकों पर अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिव्त्ति में अन्तर नहीं है। इसके अतिरिक्त महिला एवं पुरूष शिक्षकों की अभिव्त्ति में भी अन्तर नहीं पाया गया है।

अतः इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक ई–लर्निंग में समान रूप से रूचि लेते हुए अध्ययन करा रहे हैं।

कुजी शब्द :

ई–लर्निंग, अभिवृत्ति, डिजीटल क्रान्ति, इण्टरनेट।

प्रस्तावना :

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, वह तकनीकी उन्नति और डिजीटल क्रान्ति का युग है। इस युग में नवीनतम अनुसंधान और अविष्कारों के माध्यम से एक नया समाज स्थापित हो रहा है। इस युग में इण्टरनेट, सोशल मीडिया और ए. आई. जैसी तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है और लगभग प्रत्येक क्षेत्र इसका उपयोग करके स्वयं को अद्यतन कर रहा है। ऐसे में शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्रान्ति का प्रवेश लगभग 1990 के दशक में हुआ। इस समय कम्प्युटर तकनीक के विभिन्न पहलूओं का प्रयोग प्रारंभ हुआ, इसके पश्चात् इण्टरनेट का आगमन हुआ और शिक्षा का डिजिटल स्वरूप प्रारंभ हुआ। इसे शिक्षा का डिजिटलीकरण भी कहा जा सकता है। इसके अन्तर्गत शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए किए गए सभी प्रयोग सम्मिलित हैं। शिक्षा का डिजिटलीकरण शिक्षा को समृद्धिशील बनाता है और छात्रों को अपनी क्षमताएं विकसित करने में सहायता करता है। छात्रों को अधिक सक्रिय और समर्थ बनाता है जिससें वे कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें।

ई–लर्निंग डिजिटल शिक्षा का ही एक स्वरूप है।

ई–लर्निंग क्या है? – किसी भी इलेक्ट्रॉनिक समर्थित साधन द्वारा शिक्षा प्राप्त करना या प्रदान करना ई–लर्निंग कहलाता है। ई–लर्निंग अर्थात इलेक्ट्रॉनिक लर्निंग। ई–लर्निंग के अन्तर्गत वे सभी माध्यम सम्मिलित हैं जो कि इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस

के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। ई–लर्निंग को CBT (Computer Based Training), WBT (Web Based Training) या IBT (Internet Based Training) के नाम से भी जाना जाता है।

यह कम्प्यूटर और इण्टरनेट की सहायता लेकर शिक्षा प्रदान करती है। इसके अन्तर्गत कई तरह की विधियाँ और टूल्स शामिल होते हैं जो पारंपरिक कक्षा के विपरीत ऑनलाइन या डिजीटल माध्यमों द्वारा शिक्षा प्रदान करते हैं।

ई–लर्निंग के कुछ प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं–

1. ऑनलाइन पाठ्यक्रम Massive Open Online Courses (Moocs) - ये पाठ्यक्रम इण्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराये जाते हैं जिनका चयन छात्र अपनी सुविधानुसार अपने समय के अनुसार कर सकते हैं।
   ये प्लेटफॉर्म मुफ्त और सुलभ शिक्षा का विस्तार करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। Coursera, edx जैसे प्लेटफॉर्म शिक्षा को व्यापक रूप से वैश्विक स्तर तक पहुँचाने में सक्षम सिद्ध हुए हैं।
2. वेबिनार और लाइव क्लासेस – ये कक्षायें सजीव आयोजित होती हैं तथा उसी समय छात्र इससे जुड़ कर इसका लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इन्हें विडियो कान्फ्रेन्सिंग टूल्स जैसे– Zoom, Microsoft Teams, Google meet का उपयोग करके संचालित किया जाता है।
3. Learning Management System – ऑनलाइन शिक्षा की सामग्री को प्रबंधित और वितरित करने के लिए यह एक विशेष सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म है जो कि पहले से निर्धारित पाठ्य सामग्री को छात्रों तक पहुँचाता है। Blackboard, Canvas इसके उदाहरण हैं।
4. मोबाइल लर्निंग – स्मार्टफोन और टेबलेट्स में विभिन्न एप्लीकेशन ई–लर्निंग का एक अभिन्न भाग बन चुकी हैं। यह शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बनाती हैं।

इसके अतिरिक्त ई–लर्निंग के द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है। आवागमन में लगने वाले समय और धन की बचत होती है।

वर्तमान में लगभग सभी विद्यालयों में ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है। आधुनिक समय और परिस्थिति को देखते हुये यह आवश्यक है कि प्रत्येक शिक्षक इस तकनीक से जुड़े। उनकी अभिवृत्ति ई–लर्निंग के प्रति सकारात्मक बने।

अभिवृत्ति क्या है? – किसी भी व्यक्ति के सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को दर्शाने वाला मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण अभिवृत्ति कहलाता है। यह व्यक्ति के विश्वास, विचारों और अनुभवों से प्रभावित होता है और उसके निर्णयों पर गहन प्रभाव डालता है।

"अभिवृत्ति, प्रत्युत्तर देने की वह मानसिक तथा स्नायुविक तत्परताओं से सम्बन्धित अवस्था है, जो अनुभव द्वारा संगठित होती है तथा जिसके व्यवहार पर निर्देशात्मक तथा गत्यात्मक प्रभाव पड़ता है।" – ऑलपोर्ट

अभिवृत्ति के प्रमुख तत्व निम्न हैं –

1. संज्ञानात्मक (cognitive) तत्व - यह व्यक्ति के विश्वास, विचार और ज्ञान से संबंधित होता है और व्यक्ति को किसी व्यक्ति या वस्तु की स्थिति के बारे में धारणा देता है।
2. भावनात्मक (Affective) तत्व - यह व्यक्ति की किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया दर्शाता है।
3. व्यवहारिक (Behavioral) तत्व – यह व्यक्ति को किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यवहार करने के तरीके के लिए निर्देशित करता है।

अभिवृत्ति को सामान्यतः 2 भागों में बांटा जा सकता है –

1. सकारात्मक – यह सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें व्यक्ति आशावादी रहता है और समस्याओं का समाधान खोजने में विश्वास रखता है।
2. नकारात्मक – यह निराशावादी दृष्टिकोण को दर्शाती है जिसमें व्यक्ति नकारात्मक विचार रखता है और समस्याओं को कठिनाई के रूप में देखता है और उनका समाधान खोजने के स्थान पर स्वयं अवसादग्रस्त हो जाता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :

वर्तमान में ई–लर्निंग के प्रति कुछ शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है तो कुछ की नकारात्मक। प्रत्येक व्यक्ति में यह अभिवृत्ति भिन्न होती है। शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक तथा महिला और पुरूष शिक्षकों में भी यह भिन्नता पाई जा सकती है।

प्रस्तुत आलेख के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न महिला एवं पुरूष शिक्षकों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति में भिन्नता है या नहीं।

आज की शिक्षा में ई–लर्निंग का महत्व सर्वाधिक है किन्तु शिक्षकों को इस आधुनिक तकनीक का ज्ञान ना होने के कारण वे इसका उपयोग करने में संकोच करते हैं।

आधुनिक समय में इस प्रकार के शोध की आवश्यकता इसलिए है कि ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाया जा सके और शिक्षकों को जागरूक किया जा सके।

संबंधित साहित्य का अध्ययन :

Anit Kaur & Shankar Singh (2021) ने देहरादून जिले के H.N.B. Garhwal University से संबंधित शिक्षा महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर अध्ययन किया। उन्होंने स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा डाटा एकत्र किया और अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि महिला छात्राध्यपकों और पुरूष छात्राध्यपकों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापक और शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति में भी अन्तर पाया जाता है, किन्तु कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता।

kisanga D H (2016) ने तंजानिया के उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। 4 उच्च शिक्षा संस्थानों के 258 शिक्षकों पर किए गए शोध द्वारा निष्कर्ष निकाला गया कि कम्प्यूटर की जानकारी रखनें वाले शिक्षकों में ई–लर्निंग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है।

Alzarani (2019) ने साऊदी अरेबिया में सेकेण्डरी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण मे ई–लर्निंग तकनीक की स्वीकार्यता को प्रभवित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। उन्होनें शिक्षकों के लिंग, आयु, शिक्षण अनुभव, विशेषज्ञता, शैक्षिक स्तर, ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति, शिक्षक प्रशिक्षण, प्ब्ज कौशल इत्यादि कारकों का चयन शोध हेतु किया तथा यह ज्ञात किया कि ये कारक ई–लर्निंग तकनीक की स्वीकार्यता को प्रभावित करते हैं।

Gazmend Xhaferi, Arta Farizi and Rovena Bahiti (2021) ने Macadonia में University of Tetovo के 49 शिक्षकों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ई–लर्निंग शिक्षण के प्रति सहमत और असहमत शिक्षकों की संख्या लगभग समान है। लिंग और विषय के आधार पर भी ई–लर्निंग द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।उन्होंने यह भी बताया कि ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति शिक्षण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोध के परिणामों के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थानों में ई–लर्निंग के प्रति एक अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

समस्या कथन :

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।

शोध के उद्देश्य :

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ :

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध कार्यविधि :

जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में ग्वालियर जिले के शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।

न्यादर्श :

न्यादर्श के रूप में ग्वालियर जिले के शहरी क्षेत्र के 10 शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन शोध हेतु किया गया है, जिसका विवरण निम्न रेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत है –

न्यादर्शन विधि :

इस शोध में स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करके न्यादर्शों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में संबंधित विषय के 25 प्रश्न है जिन्हें 5 क्षेत्रों में विभक्त किया गया है।

प्रदत्तों का संकलन :

प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

सांख्यिकीय तकनीक :

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

गणना :

1. परिकल्पना : शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालय प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
शासकीय विद्यालय	50	86.86	19.088	1.497
अशासकीय विद्यालय	50	80.68	22.103	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता अंश 98 पर 0.05 स्तर पर परिकलित मान 1.497 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान 1.98 से कम है। चूंकि सारणी मान परिकलित मान से अधिक है अतः इस स्तर पर यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

2. परिकल्पना : शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शिक्षक प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
महिला शिक्षक	25	85.88	16.236	0.689
पुरूष शिक्षक	25	81.92	23.660	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता अंश 48 पर 0.05 स्तर पर परिकलित मान 0.689 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान 1.67 से कम है। चूंकि सारणी मान परिकलित मान से अधिक है अतः इस स्तर पर यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त सभी विश्लेषणों से स्पष्ट है कि शासकीय और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया है। इसी प्रकार महिला एवं पुरूष शिक्षकों की ई–लर्निंग द्वारा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में भी कोई अन्तर नहीं पाया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि शासकीय एवं अशासकीय दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में ई–लर्निंग को समान महत्व दिया जा रहा है तथा दोनों ही विद्यालयों में महिला और पुरूष शिक्षक समान रूचि लेकर शिक्षण करते हैं।

अतः भविष्य में ई–लर्निंग के विकास की उत्तम संभावनाएं प्रतीत होती है। लगभग सभी विद्यालयों में शिक्षक और शिक्षिकाएं पूर्ण रूचि और उत्सुकता के साथ अपने विषय के प्रति गंभीर रह कर ई–लर्निंग के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यदि शिक्षकों को और अधिक प्रशिक्षण और सुविधायें प्रदान की जाये तो भविष्य में ई–लर्निंग, शिक्षा प्रदान करने का एक सुविधाजनक माध्यम बनकर सामने आ सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

(n.d.). Retrieved from https://www.wikipedia.org/.

(n.d.). Retrieved from https://shodhganga.inflibnet.ac.in/.

Alzahrani, A. M. (2019, April). Factors That Influence Secondary School Teachers' Acceptance Of E-Learning Technologies inteaching in the KIngdom of Saudi Arabia. *Journal of Research in Curriculum, Instruction and Educational Technology, 5*(2), 175-196.

Anit Kaur, S. S. (2021, December). Attitude Of Pupil Teachers Towards Onling Teaching During Covid Period. *International Journal Of Creative Reserach Thoughts (IJCRT), 9*(12), 191-196.

Dr. R.K.S. Aroda, G. c. (2021, APRIL). डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन. *CHETANA, INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION, 2*, 58-65.

Gazmend Xhaferi, A. F. (2018, July). Teachers' Attitude Towards E-Leaning in Higher Education in Macadonia Case Study: University of Tetovo. *European Journal of Electrical and Computer Engineering, 2*(5), 14-17.

Kisanga, D. (2016, September). Determinants of Teachers' Attitude Towards E-learning in Tanzanian Higher Learning Institutions. *International Review of Research in Open and Distributed Learning, 17*(5), 109-125.

पाठक, प. (n.d.). *शिक्षा मनोविज्ञान.* आगरा: श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

श्रीवास्तव, ड. ए. (n.d.). *अनुसन्धान विधियाँ*(Vol. iv). आगरा: साहित्य प्रकाशन, आगरा.